सोमवार 26 अक्टूबर 2026 अंक 07

दीपान्विति

घटनाओं, विचारों और कहानियों की कड़ियाँ



सौजन्य: रानी झा - बर्लिन में मना दशैं त्योहार: भारत-नेपाल संबंध का अटूट आधार है दशहरा

बर्लिन में नेपाल-भारत संगम

विजयादशमी और दशैं का अनूठा मेल

---------- **दीपा दिनेशनील**

भारत-नेपाल से हजारों मील दूर एक यूरोपीय देश में जब कोई नेपाली परिवार अपने भारतीय मित्रों को विजयादशमी का पर्व अपने साथ मनाने आमंत्रित करता है तब मन प्रसन्नता के साथ-साथ उत्सुकता से भी भर जाता है। बुराई पर अच्छाई का पर्व कहा जाने वाला विजयादशमी अनेक पौराणिक कथाओं से घिरा है। उस पर नेपाल का एंगल कहानी में ट्विस्ट लाने के लिए काफी है। नवरात्रों की दुर्गा आराधना के बाद मधु-कैटभ, रक्तबीज, शुम्भ-निशुम्भ और महिषासुर जैसे दैत्यों का नाश करने वाली दुर्गा माँ की स्तुति और गुणगान कर दसवें दिन पूजा संपन्न मानी जाती है और माँ की प्रतिमा का विसर्जन किया जाता है। वहीं, इसी दिन श्रीराम द्वारा रावण वध किया जाता है, रामलीलाएँ होती हैं, रावण के पुतले जलाए जाते हैं और अंततः सत्य विजयी हुआ यह सिद्ध होता है। भारत के विभिन्न शहरों में यह पर्व कमोबेश इन्हीं रूपों में मनाए जाते हैं। इस पर्व का सबसे खूबसूरत पहलू है - कहीं गरबा की धूम, कहीं डांडिया का रास, कहीं मंत्रोच्चार की गूंज तो कहीं सिंदूर खेला का नाद – जितने समुदाय उतनी परम्पराएँ और हर परम्परा की अपनी विशेषताएँ। दस दिनों के इस पर्व को अपने-अपने अनुसार मनाता है। तरीके बदलते हैं, भाव एक ही रहता है – भक्ति, शक्ति और संस्कृति – यही है दस दिवसीय दशहरा का त्योहार! किन्तु यह बहुत कम लोगों को पता होगा कि नेपाल, मिथिला के कुछ क्षेत्रों, भूटान और म्यान्मार तथा भारत के कुछ उत्तर-पूर्वीय क्षेत्रों में यह त्योहार एक पखवाड़ा यानी पंद्रह दिनों का होता है। हिन्दू पञ्चांग के अनुसार अश्विन माह के शुक्ल पक्ष में आरंभ होकर यह पर्व पूर्णिमा को अंत होता है। इनमें से प्रथम, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, और अंतिम दिन (15 वां दिन) यानी पूर्णिमा (मिथिला में यह दिन कोजगरा के नाम से जाना जाता है) महत्वपूर्ण माने गए हैं। इस वर्ष यह पर्व 11 अक्टूबर से आरंभ होकर 20/21 अक्टूबर तक देश-विदेश के विभिन्न हिन्दू समुदायों द्वारा बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। सभी पश्चिमी देशों समेत जर्मनी में भी जगह-जगह नवरात्रों पर डांडिया, गरबा और मंदिरों में पूजा-अर्चना की धूम रही। विदेश में रह रहे आम भारतीय परिवारों के साथ-साथ अमेरिका में बसी प्रियंका चोपड़ा जोनस ने भी अपने पति निक जोनस और बेटी मालती मेरी जोनस के साथ माँ दुर्गा की आराधना करते हुए दुर्गापूजा मनाया। प्रियंका चोपड़ा ने सोशल मीडिया पर स्वयं उन तस्वीरों और वीडियो को शेयर कर पूरी दुनिया को यह सन्देश दिया कि हम भारतीय जहाँ जाते हैं, अपने संस्कार-संस्कृति साथ ले जाते हैं। इसी क्रम में एक कदम आगे बर्लिन में बसे भारतीय संस्कृति के पुरोधाओं ने भारतीय विधि के साथ-साथ नेपाल के दशैं का भी उसी जोश और उल्लास के साथ अभिनन्दन किया। बर्लिन में बसे दंपत्ति भारतीय मूल की रानी झा और नेपाली मूल के हिमेन्द्र झा पिछले एक दशक से अधिक समय से अपने घर में दशैं का त्योहार मनाते आए हैं और आस-पास बसे भारतीय परिवारों को इस आयोजन में सम्मिलित करते हैं। सांस्कृतिक मिलन का यह आयोजन उस समय आस्था और विश्वास का प्रतीक बन जाता है जब हाथों में पूजा की थाल और मोतीचूर लड्डू का प्रसाद लिए ये दंपत्ति आगंतुकों के माथे पर दही-चावल-सिंदूर का टीका, कानों पर घर में उगाया जौ का घास (जामरा) लगा कर मंत्रोच्चार करते हुए देवी का आशीर्वाद देते हैं। दशैं का यह बेहद ख़ास रूप हम भारतीयों के लिए बेहद अनूठा और भावुक करने वाला होता है। बच्चों में भी इस विधि को लेकर रोमांच बना रहता है और वे एक-एक चरण का आनन्द लेते हुए टीका-अर्चना करवाते हैं। विदेशों में पल रहे बच्चों के लिए अपनी संस्कृति से जुड़े रहने का यह अवसर वास्तव में हमें सीख देता है कि जड़ों से जुड़ कर भी हम मॉडर्न और प्रोग्रेसिव बन सकते हैं। अपनी संस्कृति का सम्मान हमारे अपने हाथों में है और इसे अपनाते हुए आगे बढ़ने पर हमें गर्व है। इस अखण्ड आस्था को दण्डवत प्रणाम!

दशैं की महत्ता

---------- **दीपा दिनेशनील**



ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते

नवरात्र के पहले दिन मिथिला और नेपाल के मधेस क्षेत्रों में झिझिया लोकनृत्य के साथ “घटस्थापना” की जाती है। इसमें एक कलश में मिटटी डाल कर जौ के बीज बोए जाते हैं जिन्हें नौ दिनों तक पावन जल से सींचा जाता है। इस कलश को दशैं घर यानी पूजा स्थल पर रखा जाता है, जहाँ सूर्य की किरणें नहीं आती हैं। नवरात्रों में सुबह-शाम दुर्गा के साथ-साथ इस कलश की भी पूजा की जाती है। दस दिनों में यह जौ 5-6 इंच लम्बे घास (जामरा) में बदल जाता है। दशैं में इसी जामरा को अपने मस्तक पर स्थान देकर सौभाग्य की कामना की जाती है। कलश देवी दुर्गा का प्रतीक माना जाता है और जामरा उनका आशीर्वाद। यह सांस्कृतिक धरोहर धार्मिक अनुष्ठान से अधिक हमारी सामुदायिक एकता और विश्व-कल्याण के भाव से सराबोर एक परम्परा है जो हमें स्मरण कराता है कि अपने देश से मीलों दूर रह कर भी हम मानव कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं, धन-धान्य, सौभाग्य और ऐश्वर्य की कामना करते हैं, अपने आने वाले भविष्य - हमारी अगली पीढ़ी – के लिए सुनहरे भविष्य की माँग करते हैं और सबके सुख और कल्याण का भाव रखते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्।।



सौजन्य: तेजस्वी श्रेष्ठा



वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल एवं भारतीय राजदूत अजीत गुप्ते को पत्रिका भेंट करती लेडीज़ कॉर्नर सदस्या एवं पत्रिका सम्पादक कविता पॉल

लेडीज़ कॉर्नर पत्रिका सप्रेम भेंट

जब वाणिज्य मंत्री और राजदूत ने की प्रशंसा: कविता पॉल

---------- **दीपान्विति न्यूज़ डेस्क**

लेडीज़ कॉर्नर की कविता पॉल ने बर्लिन दौरे पर आए भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और जर्मनी में भारतीय राजदूत अजीत गुप्ते को संस्था के 40वें स्थापना दिवस पर लोकार्पित विशेषांक "40 Glorious years of Ladies Corner Berlin" भेंट की। लेडीज़ कॉर्नर के लिए यह एक गरिमामय अवसर था। शो-बिज़ और शोहरत की अंधी दौड़ में लेडीज़ कॉर्नर एक ऐसी संस्था बन कर उभरी है जिसने नि:स्वार्थ भाव से समाज के कार्यों में सक्रीय भागीदारी दी है। जर्मनी के बर्लिन शहर में वर्ष 1985 में शुरू हुई यह संस्था पिछले 40 वर्षों से एकता और अखंडता के भाव को आगे बढ़ाते हुए अटल खड़ी है। मात्र चार कर्मठ भारतीय महिलाओं - सुशीला शर्मा हक़, सुधा कोठारी, डोरा सैमुएल और छाया सेन गुप्ता -द्वारा भारत मजलिस से निकली इस लेडीज़ कॉर्नर में आज चालीस से अधिक सदस्य हैं। भारतीय परिधानों से लैस फ़ैशन शो से लेकर प्रादेशिक लोकगीतों का आयोजन तक, भांगड़ा-गिद्दा जैसे लोकनृत्य को अंतरराष्ट्रीय मंच देने से लेकर 15 अगस्त और 26 जनवरी को "ब्राण्डेनबर्गर टूअर" की झाँकियों में अपना परचम बुलंद करने तक - लेडीज़ कॉर्नर ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से हमेशा अपने सदस्यों का मनोबल बढ़ाया है। इन चालीस वर्षों में संस्था ने कई कीर्तिमान गढ़े, कई विपरीत परिस्थितियों का सामना किया किन्तु कभी हार नहीं मानी। लेडीज़ कॉर्नर की गौरव गाथा को समेटे इस पत्रिका को इन गणमान्य अतिथियों को भेंट करते हुए कविता के मन में गर्व, संतोष और सुख का भाव था। यह पत्रिका संस्था से जुड़े लोगों के लिए केवल एक पुस्तक नहीं बल्कि उनके चालीस वर्षों के अनवरत प्रयासों और कार्यों का दस्तावेज़ है जो बर्लिन में बसे भारतीयों विशेषकर स्त्रियों के लिए प्रेरणास्रोत है।

पीयूष वेदप्रकाश गोयल: एक परिचय

---------- रिसर्च डेस्क

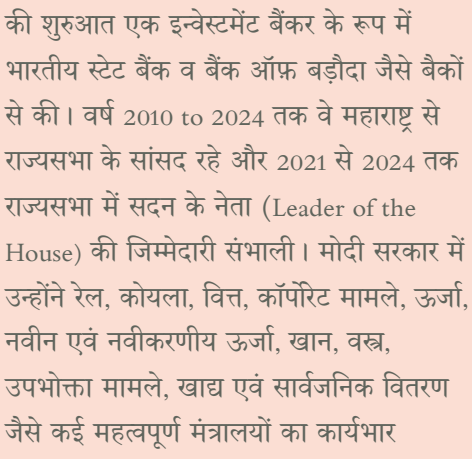

भारत के तेरहवें वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल का जन्म 13 जून 1964 में मुंबई में हुआ था। उनकी माता चन्द्रकान्ता गोयल और पिता वेदप्रकाश गोयल भारतीय जनता पार्टी के सम्मानित सदस्य रहे हैं। माँ महाराष्ट्र से तीन बार भाजपा की विधायिका रहीं हैं जबकि पिता तीसरी वाजपेयी सरकार में केन्द्रीय मंत्री रह चुके हैं। मुंबई के डॉन बोस्को हाई स्कूल, माटुंगा से स्कूली शिक्षा लेने के बाद श्री गोयल ने मुंबई विश्वविद्यालय से वकालत की उपाधि ली। वे एक मेरिट धारी (एआईआर 2) चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं। पीयूष गोयल ने 1984 से पार्टी में सक्रिय रूप से काम करना शुरू किया और वे भाजपा के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष भी रह चुके हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत एक इन्वेस्टमेंट बैंकर के रूप में भारतीय स्टेट बैंक व बैंक ऑफ़ बड़ौदा जैसे बैंकों से की। वर्ष 2010 to 2024 तक वे महाराष्ट्र से राज्यसभा के सांसद रहे और 2021 से 2024 तक राज्यसभा में सदन के नेता (Leader of the House) की जिम्मेदारी संभाली। मोदी सरकार में उन्होंने रेल, कोयला, वित्त, कॉर्पोरेट मामले, ऊर्जा, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा, खान, वस्त्र, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण जैसे कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों का कार्यभार संभाला है। वर्ष 2019 से वे भारत सरकार में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के पद पर आसीन हैं। 22 से 27 अक्टूबर तक पीयूष गोयल जर्मनी और नीदरलैंड के आधिकारिक अंतरराष्ट्रीय दौरे पर हैं। उनके साथ लगभग 100 व्यवसायों और स्टार्टअप्स का एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल शामिल है। यात्रा का मुख्य उद्देश्य भारत-जर्मनी व्यापार, निवेश व उन्नत विनिर्माण को बढ़ावा देना और रणनीतिक साझेदारी को गहरा करना है।

बर्लिन ग्लोबल डायलॉग में पीयूष गोयल लाजवाब

भारत का आत्मविश्वास देख दंग रह गए यूरोपीय प्रतिनिधि

---------- **बर्लिन डेस्क**

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल की 22 से 24 अक्टूबर 2026 की दो दिवसीय आधिकारिक बर्लिन यात्रा कई कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण और दिलचस्प कही जा सकती है। बर्लिन ग्लोबल डायलॉग में वैश्विक नीति निर्माताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने पर्यावरण संकट पर विकसित देशों की भूमिका रेखांकित करते हुए कहा कि जिन्होंने दशकों तक कोयला जलाकर अपनी अर्थव्यवस्थाएं बनाईं, वे अब विकासशील देशों पर कार्बन उत्सर्जन का बोझ डाल रहे हैं। जलवायु वित्त पोषण के सवाल पर उन्होंने याद दिलाया कि विकसित देशों ने पेरिस समझौते (COP21) के तहत $100 बिलियन के क्लाइमेट फंड का जो वादा किया था, उसमें से भारत और ग्लोबल साउथ को अभी तक "एक चवन्नी भी नहीं मिली है"। उन्होंने यूरोपीय संघ के 'सीमा समायोजन तंत्र' (CBAM) पर सवाल उठाते हुए कहा कि इससे स्टील, एल्यूमीनियम और सीमेंट जैसी आयातित वस्तुएँ महंगी होंगी, जिससे विकासशील देशों के निर्यात पर बुरा असर पड़ेगा। उन्होंने जर्मनी में रह रहे भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी शोधकर्ताओं और छात्रों के साथ विशेष बातचीत की। उन्होंने छात्रों से 'विकसित भारत' की यात्रा में योगदान देने का आग्रह किया और आश्वासन दिया कि उनके नवाचारों (Innovations) और स्टार्टअप्स को वैश्विक व्यापार मेलों में उचित मंच दिया जाएगा। उन्होंने उद्योग-शिक्षा और शोध क्षेत्र में आपसी साझेदारी को मजबूत करने के रास्तों पर जोर दिया। भारत-जर्मनी उद्योग संबंधों की दृष्टि से यह यात्रा बेहद महत्वपूर्ण रहा।



नेटफ्लिक्स पर नीरज पाण्डेय की 'गजब रात' कर रही कमाल: दिव्या दत्ता, अक्षय ओबेरॉय, मनोज वाजपेयी, नुसरत भरुचा, साकिब सलीम, राजीव गुप्ता, नीरज पाण्डेय (L-R)

गज़ब का सस्पेंस है "गजब रात"

कोई नहीं मान रहा किसी की बात

---------- दीपा दिनेशनील

बात चाहे ओटीटी के छोटे पर्दे की हो या सिनेमाघरों के बड़े पर्दों की, मनोज वाजपेयी का किसी भी स्क्रीन पर आना एक्टिंग की मास्टर क्लास हो जाता है। कहानी, सस्पेंस, सिनेमेटोग्राफी एक तरफ और मनोज वाजपेयी का स्क्रीन प्रेजेंस एक तरफ – जैसे-जैसे फिल्म आगे बढती है उनका किरदार उतना ही उलझता चला जाता है। उनका हर एक फ्रेम मानो दर्शकों को चैलेंज कर रहा हो – मेरा करैक्टर बूझो तो जानें! नेटफ्लिक्स पर हालिया रिलीज़ नीरज पाण्डेय निर्मित "गजब रात" एक रात की कहानी है जिसमें मिलेगा सस्पेंस का करारा तड़का, किरदारों के ग्रे शेड्स और एक सवाल कि क्या सत्य केवल छलावा है या इसका अपना कोई अस्तित्व भी है? कहानी एक होटल के ऑर्केस्ट्रेटेड (पूर्व-नियोजित) रेड से शुरू होती है जहाँ कुछ भ्रष्ट पुलिस वाले पैसे कमाने के इरादे से रेड को अंजाम दे रहे होते हैं कि उन्हें पास ही हुए एक सनसनीखेज़ दुर्घटना की तफ्तीश के लिए जबरन वहाँ भेज दिया जाता है। मामला बीच सड़क पर पड़ी एक अधमरी लड़की का होता है जो कौन है, कहाँ से आई है कोई नहीं जानता। प्रत्यक्षदर्शियों के हिसाब से उसे एक महँगी गाड़ी से गिरते देखा गया और सड़क पर मौजूद भीड़ ने देखते-ही-देखते उस लड़की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। आला अधिकारियों और मंत्रियों को टैग कर वायरल हुई तस्वीर चंद मिनटों में समूचे व्यवस्था तंत्र पर सवालिया निशान खड़ा करता है और शुरू होता है सिस्टम का तांडव – आख़िर कौन है यह लड़की – भारतीय, रशियन, अमेरिकन या कोई और? सेक्सुअल असाल्ट या देशद्रोह, पुलिस रक्षक होगी या भक्षक, ऐसा क्या है कि इस लड़की में कि सीबीआई, एनआईए, महिला आयोग और मंत्री सभी दिलचस्पी ले रहे हैं – कई सवाल और जवाब किसी के पास नहीं। ऐसी ज़बरदस्त कहानी खुद चल कर आपके घरों में आई है, एक बार देखना तो बनता है। आज ही देखिए और रहस्यों से पर्दा उठाइये 😊

इन्स्पेक्टर अजय निर्वित उर्फ़ गिरगिट की भूमिका में मनोज वाजपेयी का किरदार समझने में पूरी फ़िल्म ख़त्म हो जाती है। राजीव गुप्ता थाना प्रभारी प्रवीण राणा की भूमिका में दर्शकों को गुदगुदा सकते हैं। मंत्री सुनीता चौधरी की भूमिका में दिव्या दत्ता की अदाकारी से कोई शिकायत नहीं है किन्तु इस किरदार में उनका मासूम चेहरा फिट नहीं बैठता। सोशल एक्टिविस्ट नेहा प्रभु के किरदार में श्रद्धा दास ने बेहतरीन अभिनय किया है। सीबीआई अधिकारी नवीन मधोक के किरदार में अक्षय ओबरॉय एकदम फ़िट बैठते हैं – चेहरे पर मासूमियत, मन में उलझन, साजिश या षड्यंत्र – चाहता क्या है भ्रष्ट तंत्र। एन आई ए करण गिल (साकिब सलीम) भी कई सवालों के साथ स्क्रीन पर आता है। घायल लड़की, जिसके इर्द-गिर्द पूरी रात अफरा-तफरी मची है, के किरदार में अदिति संध्या शर्मा भी सटीक बैठती हैं। होटल मेनेजर लवली की भूमिका में कीकू शारदा, सेक्स वर्कर नुसरत भरुचा समेत अन्य कलाकार तेज़ दौड़ती कहानी को थोड़ा विश्राम देने का काम करते हैं, वर्ना असल कहानी में इनका कोई खास योगदान नहीं है। कीकू शारदा फिर भी मनोज वाजपेयी के साथ असल रोमांच में शामिल होता है, नुसरत का टैलेंट ऐसे किरदार पर वेस्ट होते देखना थोड़ा चुभ सकता है। लेखक-निर्देशक ऋतेश शाह ने छोटे पर्दे पर मानो जादू कर दिया हो – एक-एक फ्रेम ऐसा बनाया है कि दर्शक अपनी स्क्रीन से ग्लू हुए बिना नहीं रह सकते। सिनेमेटोग्राफ़र अरविन्द सिंह के कैमरा एंगल्स भी बेहतरीन हैं – किरदारों के क्लोज़-अप और लॉन्ग शॉट का बेहतरीन इस्तेमाल देखने को मिलता है। आधी से ज्यादा फ़िल्म अस्पताल के एक बेड और कॉरीडोर में फ़िल्माई गयी है किन्तु कथानक और ट्रीटमेंट दर्शकों को कभी बोर नहीं होने देता। कुल मिलाकर 'गजब रात' सस्पेंस प्रेमियों और मनोज वाजपेयी के प्रशंसकों के लिए एक जानदार तोहफ़ा है जो जाते-जाते मन में सत्य और उसे बचाने की कीमत पर गहरा मंथन करने को विवश कर देता है। आपको यह फ़िल्म कैसी लगी, अवश्य बताइयेगा। फ़िल्मों पर विशेष जानने के लिए पढ़ते रहिए – दीपान्विति 😊

फ़िल्मी अक्टूबर

इस माह की चुनिन्दा फ़िल्में

---------- रिसर्च डेस्क

भारत फिल्मों का देश है। यहाँ तीज-त्योहारों के साथ-साथ फ़िल्में भी साल भर बनती रहती हैं और प्रतिमाह औसतन पाँच-छह फ़िल्में रिलीज़ हो ही जाती हैं। यदि हिंदी के साथ भाषायी फ़िल्मों को भी जोड़ दिया जाए तो यह आँकड़ा दस के पार जा सकता है। लेकिन कमाल की बात यह है कि हमारे यहाँ जनसंख्या का विस्तार और दर्शकों के पसंद-नापसंद में इतनी विविधता है कि कैसी भी फिल्म हो, इसे अपने हिस्से के दर्शक मिल ही जाते हैं। दीपान्विति अपने पाठकों के लिए उनकी पसंदीदा फ़िल्मों की जानकारी देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी श्रृंखला में अक्टूबर माह की फ़िल्मों की जानकारी यहाँ प्रस्तुत है, जिन्हें देख कर आपको अच्छा लग सकता है:

दृश्यम: द कनक्लूश्ज़न (2 अक्टूबर): दृश्यम के प्रशंसकों के लिए यह फ़िल्म एक अप्रत्याशित तोहफ़ा है जिसे ओरिजिनल से भी बेहतर कहा जा रहा है। अब तक 2 अक्टूबर पर टिकी यह कहानी इस बार 23 जुलाई पर जा अटकी है जिसने कोर्ट रूम में वकीलों के साथ-साथ जज के भी होश उड़ा दिए हैं। अजय देवगन ने केवल आँखों से अदाकारी कर एक बार फिर सबको अपना दीवाना बना दिया है। विजय सलगांवकर की कहानी का अंत जानने वकीलों की दलीलें और जज का फ़ैसला सुनने के लिए कोर्ट तो आना पड़ेगा 😊

प्रहार: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ उज्ज्वल निकम (16 अक्टूबर) एक वास्तविक घटना पर आधारित कोर्टरूम ड्रामा है। यह फिल्म 1993 के बम ब्लास्ट और 26/11 के मुंबई आतंकी हमले के बाद एकमात्र जीवित पकड़े गए आतंकवादी अजमल कसाब को सजा दिलाने के लिए सरकारी वकील उज्ज्वल निकम द्वारा लड़ी गई लंबी कानूनी लड़ाई और उनके निजी जीवन के संघर्ष पर केंद्रित है। राजकुमार राव ने वकील उज्ज्वल निकम के किरदार को काफी सहजता और गहराई से निभाया है। वहीं, कसाब के रूप में ललित प्रभाकर के अभिनय और बॉडी लैंग्वेज की बहुत तारीफ हुई है। जयदीप अहलावत और वामिका गब्बी ने भी अपने किरदारों से फिल्म को भावनात्मक मजबूती दी है। कुछ समीक्षकों के अनुसार, फिल्म का



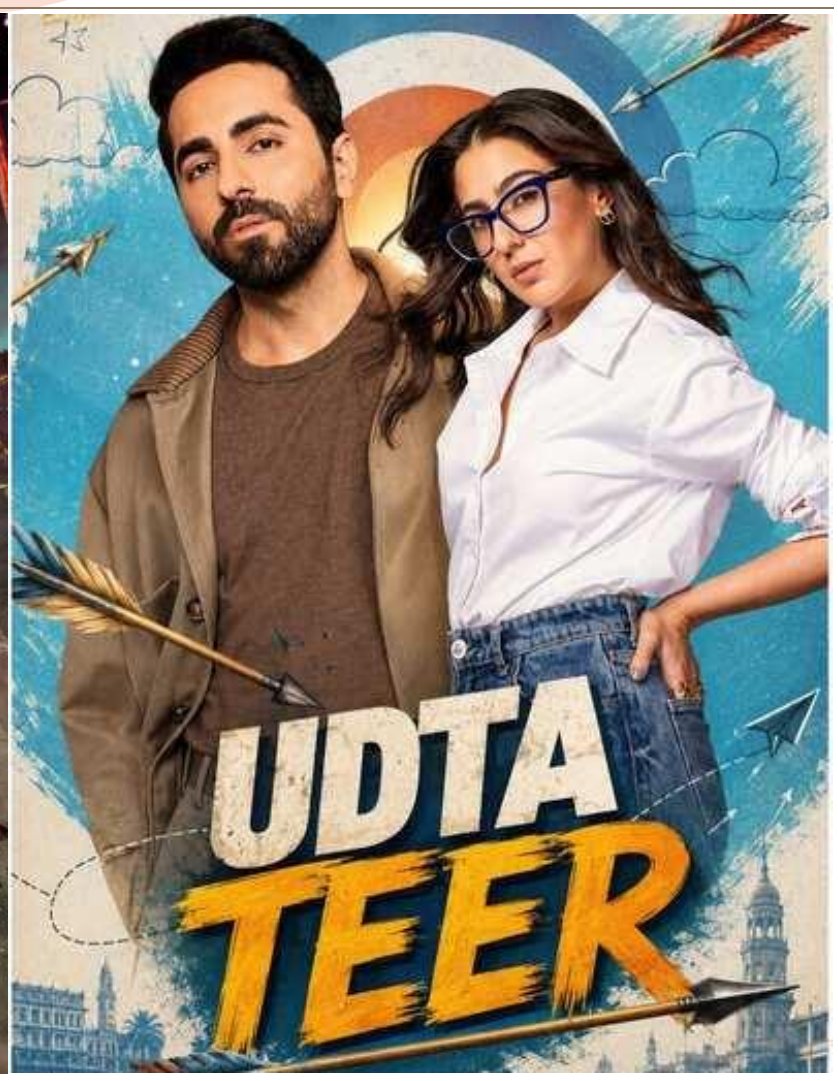

फ़िल्म पोस्टर: नई नवेली और उड़ता तीर

फ़िल्मों की सुनामी लाया 2026 का माह अक्टूबर

दूसरा हिस्सा थोड़ा खिंचा हुआ महसूस होता है और कोर्टरूम की मुख्य बहस के साथ-साथ परिवार वाले ड्रामे के बीच संतुलन की थोड़ी कमी लगती है। यह एक गंभीर और संजीदा फिल्म है जो न्याय-प्रक्रिया को बारीकी से दर्शाती है। समीक्षकों से इसे अच्छी सराहना मिली है। यह फिल्म आपको भारतीय न्याय व्यवस्था, आतंकवाद का फैला तंत्र और आम जनों के मन का देशप्रेम और द्वंद्व समझाने में मददगार हो सकता है।

नई नवेली (16 अक्टूबर)**:** क्या होता है जब बेहद खूबसूरत यामी गौतम धर मोहिनी का रूप लेकर नई नवेली दुल्हन बन मेरठ के एक प्रतिष्ठित परिवार में प्रवेश करती है? मोहिनी के आने के बाद घर में कुछ अजीब घटनाएं होने लगती हैं। राजा, मोहिनी का पति, मोहिनी का पक्षधर है किन्तु उसका छोटा भाई (मोहिनी का देवर) बंटू (अनुराग ठाकुर) मोहिनी पर शक करता है। अपनी भाभी को श्मशान घाट में पूजा करते हुए देख कर उसे 'डायन' समझने लगता है यहीं से शुरू होता है कॉमेडी का सिलसिला। सत्य सामने आने पर बंटू और परिवार वालों की राय बदलती है या नहीं, जानने के लिए 'नई नवेली' के घर आने (ओटीटी रिलीज़) की प्रतीक्षा करनी होगी। यह जानना दिलचस्प होगा कि किस तरह कहानी धीरे-धीरे रामायण काल और त्रेता युग के रहस्यों से जुड़ जाती है। बालाजी मोहन के निर्देशन में बनी यह फ़िल्म एक हॉरर-कॉमेडी और पौराणिक कथाओं का मिश्रण है। फिल्म का पहला हिस्सा काफी मनोरंजक, हास्य और सस्पेंस से भरपूर है। यामी गौतम और अनुराग ठाकुर का अभिनय दर्शकों को बांधे रखता है। इंटरवल के बाद कहानी रामायण, पौराणिक कथाओं और भ्रम के घालमेल में उलझ जाती है। वीएफएक्स बेहतर हो सकता था, फ्लैशबैक को एआई एनिमेशन से दिखाना कुछ लोगों को अखर सकता है, क्लाइमेक्स को थोड़ा और दमदार बनाया जा सकता था, फिर भी फिल्म की कॉमिक टाइमिंग और पारिवारिक पृष्ठभूमि इसे सपरिवार देखने योग्य बनाती है।आनंद राय और हिमांशु शर्मा का प्रयास सराहनीय कहा जा सकता है।

उड़ता तीर: यह आयुष्मान खुराना और सारा अली खान की एक क्रॉस-बॉर्डर स्पाई-कॉमेडी फिल्म है। कहानी एक अनोखे कॉन्सेप्ट पर आधारित है जिसमें एक पाकिस्तानी जासूस याद्दाश्त खोकर भारत के लिए वफादार बन जाता है। एक पाकिस्तानी जासूस अपना कवर सच मान कर भारत को बचाने के लिए अपने मुल्क पाकिस्तान के ही आतंकियों और मिशनों को तबाह करने में जुट जाता है। इस बेहद दिलचस्प प्लॉट का पहला भाग दर्शकों को मनोरंजक रूप से बांधे रखता है। गलतफहमियों और कन्फ्यूजन से जो व्यंग्य (कॉमेडी) निकलता है, वह दर्शकों को लोटपोट कर देता है। राहुल बोस, रघुबीर यादव, गुलशन ग्रोवर, राम कपूर और मुकुल देव जैसे मंझे हुए कलाकारों ने अपने कॉमिक टाइमिंग से फिल्म में जान फूंकी है। फिल्म की कॉमेडी साफ-सुथरी है। इसमें कोई अश्लील या डबल मीनिंग डायलॉग नहीं हैं, जिससे इसे पूरे परिवार के साथ देखा जा सकता है। हालाँकि फिल्म में लॉजिक की कमी लग सकती है - कहानी के कुछ घटनाक्रम थोड़े अविश्वसनीय, फिल्म का दूसरा भाग थोड़ा खिंचा और उलझा हुआ, और कुछ जगहों पर कॉमेडी थोड़ी बचकानी और जबरदस्ती थोपी हुई लगती है। अधिकतर हिंदी सिनेमा की तरह यदि आप लॉजिक भूल कर सिर्फ हँसने और एक हल्के-फुल्के स्पाई ड्रामा का मजा लेने जाना चाहते हैं, तो यह फिल्म आपको बिल्कुल निराश नहीं करेगी। आयुष्मान खुराना का यह नया अंदाज और फिल्म के क्लाइमेक्स के ट्विस्ट इसे देखने लायक बनाते हैं।



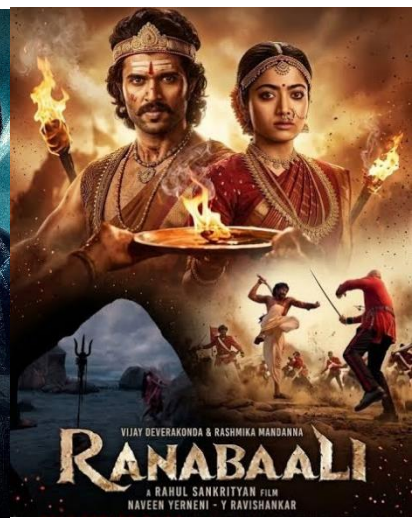

अक्टूबर में रिलीज़ अन्य महत्वपूर्ण फिल्मों में 'जेलर २ (रजनीकांत, विद्या बालन)', 'रानाबाली (रश्मिका मन्दाना, विजय देवरकोंडा), 'नखरेवाली', और 'लिटिल थॉमस' जैसी फिल्मों ने विभिन्न जॉनर (कॉमेडी, रोमांस, सोशल और पॉलिटिकल ड्रामा) में दर्शकों का मनोरंजन किया। अक्टूबर के आखिरी सप्ताह (26 अक्टूबर से 1 नवंबर के बीच) नेटफ्लिक्स, प्राइम वीडियो, जियो सिनेमा और सोनी लिव जैसे प्लेटफॉर्म्स पर लगभग 19 नई फिल्में और वेब सीरीज संभावित हैं, जिनमें थ्रिलर और कॉमेडी कंटेंट की भरमार रहेगी। अगर आप किसी खास फिल्म के बारे में उसकी कहानी, कलाकारों या समीक्षा जानना चाहते हैं, तो हमें अवश्य बताएँ।

प्रिय पाठक,

आपके पत्रों और सराहना संदेशों के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! हमें प्रसन्नता है कि दीपान्विति आपको पसंद आ रहा है। आपकी प्रतिक्रिया, सुझाव और टिप्पणियों का हमें बेसब्री से इंतज़ार रहता है। अपने लेख, कहानी अथवा संस्मरण प्रकाशित करने के लिए आप हमें लिख सकते हैं -

ईमेल: deepaanviti@gmail.com; whatsapp: +91 8095809095